श्रमण १९९१ ०४ (फोल्डर नं. ०२५००६)

सम्पादक - डॉ. अशोक कुमार सिंह

सह सम्पादक – डॉ. शिवप्रसाद

मुख्य टाइटल

अनुक्रमणिका

अर्ह परमात्माने नमः – प्रो. कल्याणमल लोढ़ा ---------- १

प्राकृत व्याकरण-वररुचि बनाम हेचन्द्र – अन्धानुकरण या विशिष्ट प्रदान – के. आर. चन्द्र --------- ११

वसन्तविलासकार बालचन्द्रसूरि-व्यक्तित्व एवं कृतित्व – डॉ. यदुनाथ प्रसाद दूबे ----------२१

अन्य प्रमुख भारतीय दर्शनों एवं जैन दर्शन में कर्मबन्ध का तुलनात्मक स्वरूप – कु. कमला जोशी ---------- ३३

ऋग्वेद में अहिंसा का सन्दर्भ – डॉ. प्रतिभा त्रिपाठी ---------- ४५

जैन आगमों में वर्णित जातिगत समता – डॉ. इन्द्रेश चन्द्र सिंह ---------- ६३

आचारांग का अनासक्ति – डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय ---------- ७३

जैन अभिलेखों की भाषाओं का स्वरूप एवं विविधताएँ – डॉ. एस. एन दूबे ---------- ८९

महावीर निर्वाण भूमि पावा – श्री भगवती प्रसाद खेतान ---------- ९३

समाधिमरण की अवधारणा की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समीक्षा – प्रो. सागरमल जैन ---------- ९९

साहित्य सत्कार ---------- १०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org